

विकास खण्ड बेलघाट-जनपद गोरखपुर (उ० प्र०) में भूमि गत्यात्मकता: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय खलीलाबाद संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन गोरखपुर जनपद के विकास खण्ड बेलघाट में भूमि उपयोग गत्यात्मकता के भौगोलिक विश्लेषण पर आधारित है। भूमि प्राकृतिक संसाधनों में अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन है, जिसका उपयोग मानव की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान होने के कारण यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों पर निर्भर करती है। क्षेत्र में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में मिट्टी, जलवायु, उच्चावच तथा मानवीय क्रियाकलाप शामिल हैं। बेलघाट विकास खण्ड में भूमि उपयोग प्रारूप में समय के साथ परिवर्तन देखने को मिलता है, जो आधुनिक तकनीक एवं संसाधनों के उपयोग से प्रभावित हुआ है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषि भूमि उपयोग की गहनता तथा उसमें होने वाले क्रमिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन क्षेत्रीय विकास, कृषि व्यवस्था तथा भूमि संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

मूल शब्द: भूमि उपयोग गत्यात्मकता, कृषि भूमि उपयोग, भौगोलिक अध्ययन, क्षेत्रीय विकास, बेलघाट विकास खण्ड

प्रस्तावना

प्राकृतिक संसाधनों में भूमि अति महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक संसाधन हो। व्यक्ति की प्रत्येक दैनिक क्रिया कलाप एवं उसकी मूलभूत व प्राथमिक आवश्यकताएँ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इसी संसाधन से होती है। व्यक्ति प्राकृतिक एवं मानवीय परिवेश से सामंजस्य स्थापित करते हुए भूमि संसाधन का सर्वाधिक उपयोग करने का प्रयास करता है। यही कारण है कि किसी स्थान विशेष की भूमि उपयोग गत्यात्मकता उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का द्योतक होता है। भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में विभिन्न भौतिक कारक जैसे— उच्चावच, जलवायु, मिट्टी का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जब तक मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन नहीं करता है तब तक वह भूमि इकाई संसाधन नहीं बन पाती है। मानव जैसे ही कृषि कार्य आरम्भ करता है भूमि लाभप्रद इकाई बन जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस क्षेत्र के भौगोलिक अध्ययन में कृषि भूमि उपयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय है। क्षेत्र विशेष में भूमि उपयोग की गहनता और उसमें क्रमिक परिवर्तन को जानना अध्ययन क्षेत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

भौगोलिक पृष्ठभूमि

विकास खण्ड बेलघाट उत्तर प्रदेश के जनपद गोरखपुर की खजनी तहसील में 26°20' उत्तरी अक्षांश से 26°30'30 अक्षांश एवं 83°5' पूर्वी देशान्तर से 83°13' पूर्वी देशान्तर तक है। यहाँ की मिट्टी प्रधानतया बलुई दोमट एवं मटियार दोमट हो। इस विकास खण्ड का कुल क्षेत्रफल 18456 हेक्टेयर है। इसके अन्तर्गत 250 ग्राम है जिसमें 80 ग्राम पंचायत 11 न्याय पंचायत है। यह एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर हो।

कृषि भूमि उपयोग गत्यात्मकता

आधुनिक वैज्ञानिक युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को ध्यान में रखते हुए सतत नवीन तकनीकी ज्ञान एवं संयंत्रों का विकास किया जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र का भूमि उपयोग प्रारूप वस्तुतः निर्वाहमूलक अवस्था की ओर अग्रसर हो। भूमि उपयोग के वर्तमान स्वरूप एवं उसकी गत्यात्मकता का अध्ययन सामान्य भूमि उपयोग के अन्तर्गत भूमि के वर्तमान स्वरूप एवं अन्तर को स्पष्ट किया गया है।

तालिका 1: सामान्य भूमि उपयोग परिवर्तन

क्रम सं.	विभिन्न मर्दों से भूमि उपयोग	क्षेत्र हेक्टेयर में 2001	कुल भौगोलिक क्षेत्र का :	कुल भौगोलिक क्षेत्र हेक्टेयर में का : 1991	कुल भौगोलिक क्षेत्र का :
1	बाग	97.25	0.43	118.23	0.5
2	कृषि योग्य बंजर भूमि	139.02	0.62	153.45	0.53
3	वर्तमान परती	512.53	2.29	723.80	3.24
4	अन्य परती	822.44	3.68	972.5	4.36
5	ऊसर एवं कृषि योग्य भूमि	368.79	1.65	482.46	2.16
6	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि	2077.83	9.13	2968.23	8.82
7	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	15929.35	71.46	15313.24	68.65
	रबी	11154.26	—	10872.43	—
	खरीफ	11150.34	—	10867.35	—
	एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र	6665.00	—	5985.00	—
8	जल क्षेत्र	518.66	2.32	879.22	3.94
9	अधिवास एवं यातायात	319.33	1.43	291.42	1.34
10	कब्रिस्तान एवं मजार	8.20	0.03	8.10	0.03
11	अन्य कृषि उपयोग भूमि	214.20	0.96	462.35	2.07
	योग	21007.5	94.18	21373.00	9582.82

स्रोत- ब्लॉक मुख्यालय, बेलघाट, सन् 2025

वन

अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तिगत फील्ड सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्राचीन काल में वनों का विस्तार अधिक था, जिसे क्रमशः मानव ने अपने उपयोग हेतु काटते गए तथा प्राप्त स्थानों को खेती योग्य भूमि में परिवर्तित करते गए। परिणामस्वरूप यहाँ का वन समय के साथ समाप्त होता चला गया, जिससे यहाँ के पर्यावरण पर मानव ने स्वयं एक बड़ा आघात पहुँचाया है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का सन क्षेत्र 1991 में 0.53% रह गया। इस प्रकार वन क्षेत्र में निरंतर कमी हो रही है।

कृषि योग्य भूमि

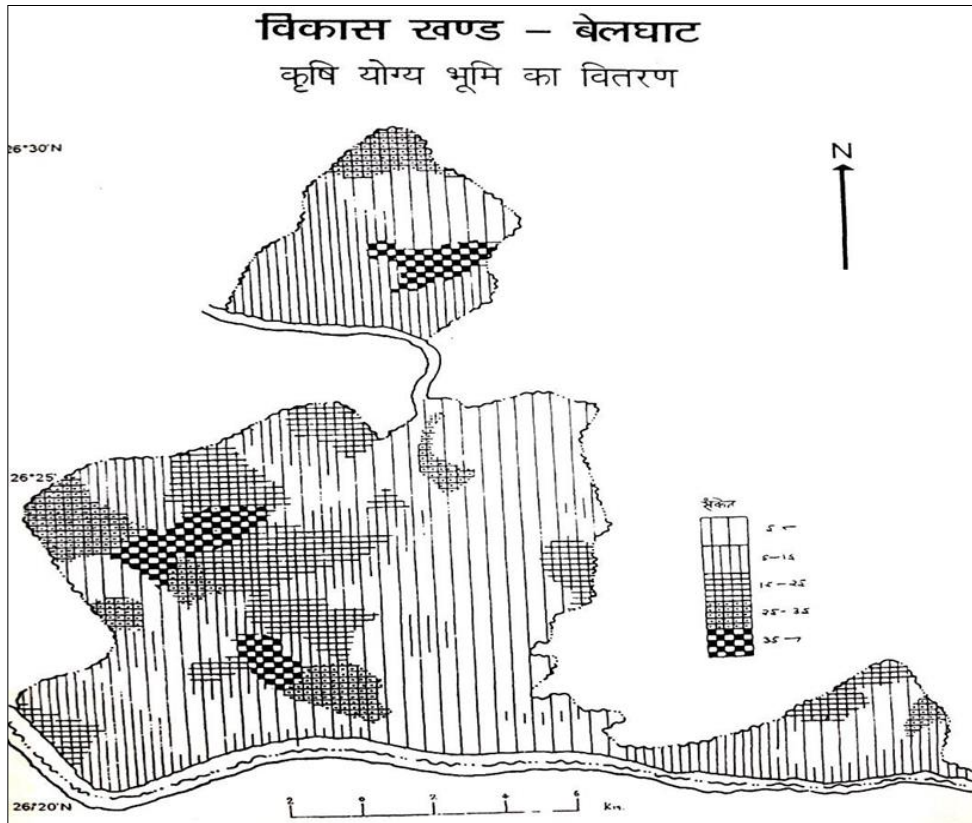
भूमि उपयोग के सन्दर्भ में भावी विस्तार की सम्भावनाएँ निहित रहती हैं। अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान में भूमि उपयोग की रूपरेखा निर्धारित की गयी है।

अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध कृषि भूमि 71.46% भाग शुद्ध कृषिगत क्षेत्र है। ग्राम स्तर पर कृषि योग्य भूमि के वितरण में पर्याप्त भिन्नता होती है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है।

तालिका 2: कृषि योग्य भूमि का वितरण

क्रम स.	श्रेणी	श्रेणी समूह	ग्राम स०	ग्राम स० का प्रतिशत
1	अति उच्च	35 से अधिक	3	3.75
2	ऊच्च	25 - 35	7	8.75
3	मध्यम	15 - 25	14	17.5
4	निम्न	5 - 15	25	31.25
5	अति निम्न	5 से कम	31	38.75
	योग		80	100

स्रोत: व्यक्तिगत परिकलन से प्राप्त आँकड़े।



आकृति 1

अति उच्च श्रेणी में (3.75) 3 ग्राम में कृषि योग्य भूमि 35 से अधिक एवं उच्च श्रेणी के (8.75) 7 ग्राम 25 से 35 के मध्य है। यहाँ सामान्यतया सिंचाई की कमी, बागों की अधिकता, परती भूमि छोड़ने की अधिक प्रवृत्ति से ऐसा देखने को मिलता है। मध्यम श्रेणी के (17.5) 14 गाँवों में कृषि योग्य भूमि का विस्तार 15 - 25 के मध्य है। इन गाँवों में कृषि योग्य भूमि के महत्वपूर्ण कारक परती भूमि, बाग, चारागाह सामान्य रूप से परिलक्षित है। अध्ययन क्षेत्र के निम्न श्रेणी में (38.75%) 31 गाँवों में विस्तृत है। इन गाँवों में सिंचाई की उत्तम सुविधा, समतल उपजाऊँ भूमि एवं जल प्लावन से सुरक्षा आदि देखने को मिलती है।

कृषि योग्य भूमि में परिवर्तनशील वितरण

अध्ययन क्षेत्र में विगत तीन दशकों में कृषि योग्य भूमि के अन्तर्गत इस की प्रवृत्ति का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। ग्राम स्तर कृषि योग्य भूमि के परिवर्तन में असमानता परिलक्षित होती है, जिसे चार श्रेणियों में विभक्त किया गया है। जो निम्न है।

तालिका 3: अकृषित योग्य भूमि का वितरण

क्रम स.	श्रेणी	श्रेणी समूह	ग्राम स०	ग्राम स० का प्रतिशत
1	अति उच्च	60 से अधिक	12	15.00
2	ऊच्च	40 - 60	15	18.75
3	मध्यम	20 - 40	39	48.75
4	निम्न	20 से कम	14	17.50
	योग		80	100

स्रोत: व्यक्तिगत परिकलन से प्राप्त आँकड़े।

गाँवों में अकृषित भूमि में परिवर्तन 40 से 50 प्रतिशत के मध्य है। ये सम्पूर्ण गाँव अध्ययन क्षेत्र के मध्य भाग में एकाकी रूप से दृश्य हैं। निम्न श्रेणी के अन्तर्गत (50 प्रतिशत) 40 ग्राम सम्मिलित है जो 30 से 40 प्रतिशत के बीच है। इस निम्न श्रेणी के अन्तर्गत जिनमें 20 प्रतिशत से कम परिवर्तन है जिसमें 7 ग्राम आते हैं। शेष गाँवों में यह परिवर्तन नगण्य है। इन अधिवासों की संख्या एवं आकार में विस्तार, सड़कों का विस्तार, शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं में प्रगति, चकबन्दी के परिणाम स्वरूप नई नालियाँ, चकरोडों अन्य सांस्कृतिक स्थानों में

वृद्धि आदि कारणों से कृषि अयोग्य भूमि के परिवर्तन में पर्याप्त वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त 10 ग्रामों में कृषि अयोग्य भूमि में ह्रास हुआ है। ये सम्पूर्ण ग्राम अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में स्थित है। इन गाँवों में सिंचाई की सुविधा में वृद्धि, जल जमाव के क्षेत्र में कमी अन्य अकृषित भूमि बंजर को सुधार कर कृषि योग्य बना लिया गया है, जिससे कृषि अयोग्य भूमि में ह्रास हुआ है। जा रही है। इसके अन्तर्गत कृषित भूमि उपयोग के तीन महत्वपूर्ण पक्षों, शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल, द्विशस्यीय क्षेत्र एवं सिंचित क्षेत्रफल का अध्ययन समाविष्ट है। कृषित भूमि, भूमि उपयोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके उपयोग की अवस्थाएँ मानव के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास के स्तर का द्योतक है। मानव कृषित कार्य से सम्बन्धित विभिन्न सुविधाओं का विकास कृषित भूमि के विस्तार के लिये सदैव जागरूक रहता है। समतल उपजाऊ मिट्टी वाले बाढ़ रहित क्षेत्र में कृषित भूमि कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 15929.35 हेक्टेयर भूमि पर सम्मिलित है। अतः स्पष्ट है कि कृषित भूमि को प्रभावित करने वाले कारणों में पर्याप्त भिन्नता परिलक्षित होती है। इसमें उच्चतम वितरण सिधौरा (97.11 प्रतिशत) तथा न्यूनतम वितरण जिगिनिया शाहपुर (30.37 प्रतिशत) में है। ग्राम स्तर पर विभिन्नता के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र को गाँवों को उच्च श्रेणियों में विभक्त किया गया है जो तालिका से स्पष्ट है।

कृषित भूमि

कृषित भूमि उपयोग का सम्बन्ध ऐसी भूमि से है जिस पर

वर्तमान समय में कृषि की

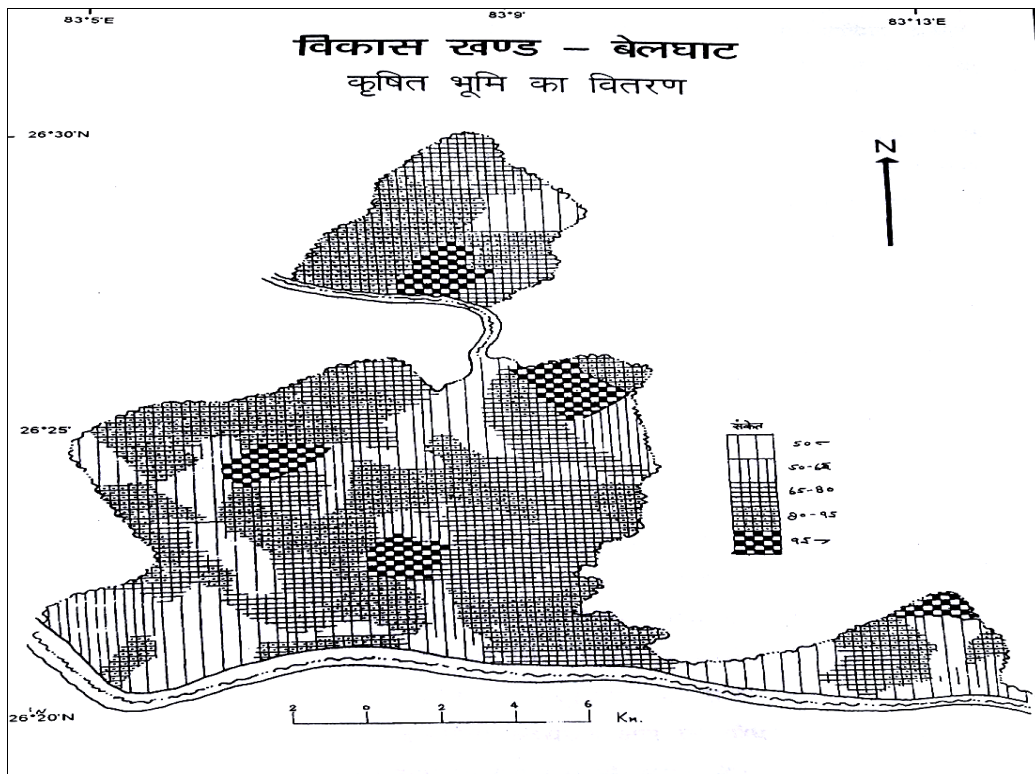
तालिका 4: कृषित भूमि वितरण

क्रम स.	श्रेणी	श्रेणी समूह	ग्राम स.	ग्राम स. का प्रतिशत
1.	अति उच्च	95 से अधिक	05	6.25
2.	ऊच्च	80 - 95	37	46.25
3.	मध्यम	65 - 80	20	25.00
4.	निम्न	50 - 65	10	12.50
5.	अति निम्न	50 से कम	08	10.00
	योग		80	100.00

स्रोत: व्यक्तिगत परिकलन से प्राप्त आँकड़े

अति उच्च श्रेणी के 6.25 प्रतिशत ग्राम में कृषित भूमि 95 प्रतिशत से अधिक है। इस श्रेणी से के गाँव अध्ययन क्षेत्र के मध्य एवं उत्तरी भाग में है। इन गाँवों की भूमि समतल उपजाऊ है तथा सिंचाई की उत्तम व्यवस्था, यातायात एवं विपणन की अच्छी सुविधाएँ, उन्नतशील बीजों एवं उर्वरकों का उचित प्रयोग, नूतन तकनीकी का विकास आदि तत्त्व कृषित भूमि के वितरण के लिये उत्तरदायी हैं।

उच्च श्रेणी के 46.25 प्रतिशत 37 गाँवों में कृषित भूमि का विस्तार 80-95 प्रतिशत के मध्य है। इस श्रेणी के गाँव अध्ययन क्षेत्र के मध्य एवं उत्तरी पूर्वी भाग में पाये जाते हैं।



आकृति 2 द्विशस्य क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 26.83 प्रतिशत यानी 5985.00 हेक्टेयर द्विशस्य क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। द्विशस्य क्षेत्र के विवरण में ग्राम्य स्तर पर पर्याप्त भिन्नता मिलती है इसमें उच्चतम वितरण 66.22 प्रतिशत लखुआपाकड़ तथा न्यूनतम 14.16 प्रतिशत सोहनाग ग्राम में है। अध्ययन क्षेत्र के प्रथम श्रेणी के अन्तर्गत दो ग्राम आते हैं। जिसमें द्विशस्य क्षेत्र 60 प्रतिशत से अधिक है। द्वितीय श्रेणी के अन्तर्गत 14 ग्राम आते हैं जिसमें

द्विशस्य क्षेत्र 50-60 के मध्य है इस गाँवों में भूमि समतल उपजाऊ है। सिंचित क्षेत्र में विस्तार, आधुनिक कृषि यन्त्रों की सुलभता उर्वरकों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग यातायात की सुविधा आदि तत्त्व इसके लिये उत्तरदायी हैं। तृतीय श्रेणी के अन्तर्गत 21 गाँव आते हैं जिसमें द्विशस्य क्षेत्र 30 प्रतिशत कम है।

द्विशस्य क्षेत्र में परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र में विगत दो दशकों में द्विशस्य क्षेत्र के अन्तर्गत उच्चतम वृद्धि हुयी है इसमें अति उच्च 105.96 प्रतिशत बेलघाट

ग्राम तथा न्यूनतम वृद्धि 2.7% डेहराटीकर ग्राम में है। इसके अलावा उच्चतम ह्रास बसन्तपुर 14.63% एवं न्यूनतम 973: बारीगाँव ग्राम में है। इस प्रकार द्विशस्य क्षेत्र में ग्राम स्तर पर पर्याप्त भिन्नता परिलक्षित होती है। सिंचाई के साधनों का विकास, जनसंख्या वृद्धि, गेहूँ एवं अन्य फसलों के उन्नतशील बीजों का प्रचारदृप्रसार उर्वरक एवं आधुनिक कृषि यन्त्रों की सुलभता तथा ग्रामीण बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका आदि द्विशस्य क्षेत्र में वृद्धि के मुख्य कारक है।

निष्कर्ष

मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, प्राविधिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन के कारण ही भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन होता रहा है। कृषि विकास के लिये भूमि का उचित प्रयोग तथा कृषि से सम्बन्ध रखने वाले सभी कार्यों की योजना बना कर विकास करना अनिवार्य है। वर्तमान समय में विकास केन्द्रों ने कृषि से सम्बन्धित नवीन उपकरणों एवं यन्त्रों से गाँव वालों को परिचित कराने एवं उनका लाभ देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ

1. सिंह ब्रज भूषण: कृषि भूगोल तारा पब्लिकेशन वाराणसी 1979 पृष्ठ 172
2. Panday MP. Impact to Irrigation on Rural Development, | case study concept Publishing Company New Delhi, 1977.
3. शर्मा एस० सी० – ग्राम डालाहर दृ भूमि उपयोग नियोजन का एक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक – 8 सं० 1 (1972) पृष्ठ 58–74
4. सिंह वी वी – भूमि उपयोग क्षमता, अवस्था एवं अनुकूलतम उपयोग उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक– 7 सं० –2 (1971)
5. थापर प्रमिला कुमारदृ कृषि भूगोल, वाराणसी पेज – (112)